हमारा 2020 का वार्षिक संदेश पत्र

हम क्यों करते हैं जी–जान से कोशिश

बिल और मिलिंडा गेट्स द्वारा

10 फरवरी 2020

12वां खण्ड, 20वीं वर्षगांठ का संस्करण

हमारे फाउंडेशन के शुरुआती दो दशकों पर मंथन

20 साल पहले जब हमने अपने फाउंडेशन की शुरुआत की थी, तो दुनिया उस समय कई मायनों में इस दुनिया से भिन्न थी, जिसमें हम अब रहते हैं। यह 9/11 से पहले, महामंदी से पहले और सोशल मीडिया के उदय से पहले हुआ था।

उस समय, मौजूदा दौर की ही तरह, उपयुक्त कारणों की कमी न थी और उनमें से अनेक के लिए निवेश करने के लिए पुख्ता तर्क मौजूद थे। उस समय हम इस बात के लिए मशहूर थे कि हम माइक्रोसॉफ्ट से कमाए गए अपने अधिकांश धन को दान करना चाहते हैं और उसका उपयोग लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में करना चाहते हैं। बेशक चुनौती यही थी कि यह कार्य सार्थक और अत्यंत प्रभावशाली ढंग से कैसे किया जाए।

अपनी परोपकारी प्राथमिकताओं के बारे में चिंतन करते समय हमने विशेषज्ञों से मुलाकात करने और विविध रिपोर्ट्स का अध्ययन करने में काफी समय बिताया। जिस जानकारी पर हमें यकीन हो गया, वह यह थी कि विश्व को अपने निर्धनतम लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए और ज्यादा कदम उठाने चाहिए। हमारे फाउंडेशन के कार्यों के मूल में यह विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ और उपयोगी जीवन जीने का अवसर पाने का हकदार है। बीस साल बाद, बहुत कुछ बदल जाने के बावजूद, आज भी यह हमारा सबसे महत्वपूर्ण प्रेरक सिद्धांत है।

> "हमारे फाउंडेशन के कार्यों के मूल में यही विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वस्थ और उपयोगी जीवन जीने का अधिकार है।"

मिलिंडा:
जिस समय हम यह लिख रहे हैं, हम, बाकी कई लोगों कि तरह, कोरोना वायरस के प्रकोप पर नज़र रख रहे हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि नए दशक की शुरुआत हमारे आसपास की दुनिया में अत्यंत असंतोष और अनिश्चितता के दौर में हो रही है। लेकिन मौजूदा दौर जैसे चुनौतीपूर्ण समय में, खासतौर पर ऐसे समय में जब हम पक्षसमर्थकों, शोधकर्ताओं, सरकारी अधिकारियों और अग्रिम मोर्चे पर रहकर काम करने वालों की सहायता के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो और अधिक स्थानों पर अधिक लोगों के जीवन को स्वस्थ और उपयोगी बना रहे हैं।

पिछले 20 साल से हमारा फाउंडेशन आसपास की दुनिया के स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार लाने और अमेरिका की सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली को मजबूती प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, क्योंकि हमारा मानना है कि स्वास्थ्य और शिक्षा स्वस्थ, बेहतर और ज्यादा समान विश्व की कुंजी हैं। जहां एक ओर बीमारी असमानता का लक्षण और कारण दोनों ही होती है, वहीं सार्वजनिक शिक्षा समानता कायम करने का माध्यम है।

हम जानते हैं कि परोपकार सरकारों या निजी क्षेत्र की जगह कतई नहीं ले सकता और उसे ऐसा करना भी नहीं चाहिए। हालांकि हमारा मानना है कि प्रगति की दिशा में यह एक अनूठी भूमिका निभा सकता है।

ज्यादा से ज्यादा यही है कि परोपकारिता ऐसे जोखिम उठाती है, जो सरकारें उठा नहीं सकतीं और कम्पनियां उठाती नहीं। सरकारों को अपने ज्यादातर संसाधन प्रमाणित समाधानों पर लगाने की जरूरत होती है। उद्योग अपने शेयरहोल्डर्स के विश्वास के प्रति उत्तरदायी होते हैं। लेकिन हमारे जैसे फाउंडेशन को अपने विचारों को परखने की आजादी है, जिन्हें आमतौर पर परखा नहीं जाता, जिनमें से कुछ सफलता मिल सकती है।

हमेशा की तरह, हमारे प्रिय मित्र और लम्बे अर्से से हमारे सलाहकार रहे वॉरेन बफेट इस बात को ज्यादा दिलचस्प ढंग से प्रस्तुत करते हैं। जब उन्होंने अपनी सम्पत्ति का काफी बड़ा हिस्सा हमारे फाउंडेशन को दान कर दिया और उसके कार्यों में साझेदार के रूप में हमारे साथ जुड़ गए ,तो उन्होंने हमसे "कामयाबी की बुलंदियां छूने के लिए जी–जान से कोशिश करने" का अनुरोध किया।

बिल:
जब वॉरेन को मुझसे कुछ महत्वपूर्ण बात कहनी होती है, तो वह किसी खेल की उपमा देते हैं।

अमेरिकी इस कहावत को बेसबॉल के खेल से समझते हैं। जब आप जी–जान से कोशिश करते हैं, तो आप गेंद को अपनी पूरी ताकत के साथ हिट करने की कोशिश करते हैं। आप जानते हैं कि आपका बल्ला गेंद को हिट करने में पूरी तरह नाकाम हो सकता है–लेकिन यदि आप हिट करने में सफल रहते हैं, तो हम बड़ी कामयाबी हासिल कर सकते हैं।

अपने परोपकारी कार्यों के बारे में हम भी कुछ ऐसा ही सोचते हैं। हमारा लक्ष्य केवल क्रमिक प्रगति करना ही नहीं है। यह किसी बड़े दांव के लिए हमारे प्रयासों और संसाधनों को पूरी तरह झोंक देने के समान है, यदि सफलता मिली, तो जिंदगियां बचाने और संवारने में कामयाब होंगे।

साफ शब्दों में कहें, तो जो जोखिम हम उठाते हैं, वे उन जोखिमों से भिन्न होते हैं, जिन्हें वैश्विक प्रगति के हमारे वास्तविक नायक उठाते हैं: स्वास्थ्य कर्मी जो संघर्षग्रस्त क्षेत्रों में बच्चों को टीके लगाने के लिए मुश्किलों का सामना करते हैं, शिक्षक जो बेहद चुनौतीपूर्ण स्कूलों में काम करने का जिम्मा उठाते हैं, दुनिया के निर्धनतम स्थानों की महिलाएं,

जो अपना दमन करने वाले सांस्कृतिक मानकों और परम्पराओं के खिलाफ आवाज उठाती हैं।उन्हें व्यक्तिगत तौर पर जैसी कुर्बानियां देनी पड़ती हैं, हमें वैसा कुछ नहीं करना पड़ता– हम नवाचारों में सहायता देने की कोशिश करते हैं, जिनसे शायद किसी दिन उनकी जिंदगी आसान बन जाए।

सब मिलाकर, हमारे फाउंडेशन ने पिछले 20 साल में 53.8 बिलियन डॉलर की राशि खर्च की है। कुल मिलाकर हम अपने फाउंडेशन की उपलब्धियों से बेहद खुश हैं। लेकिन क्या हमारे द्वारा खर्च किए गए प्रत्येक डॉलर के नतीजे हमारी उम्मीदों के मुताबिक रहे हैं? नहीं। हमें निराशा,नाकामयाबियों और अप्रत्याशित घटनाओं का सामना करना पड़ा है। हमें लगता है कि अपनी नाकामियों और साथ ही साथ अपनी कामयाबियों के बारे में पारदर्शी होना महत्वपूर्ण है – और साथ ही अपने द्वारा सीखे गए सबक को साझा करना महत्वपूर्ण है।

पिछले 20 वर्षों में हमारे फाउंडेशन ने 53.8 बिलियन डॉलर राशि कैसे खर्च की।

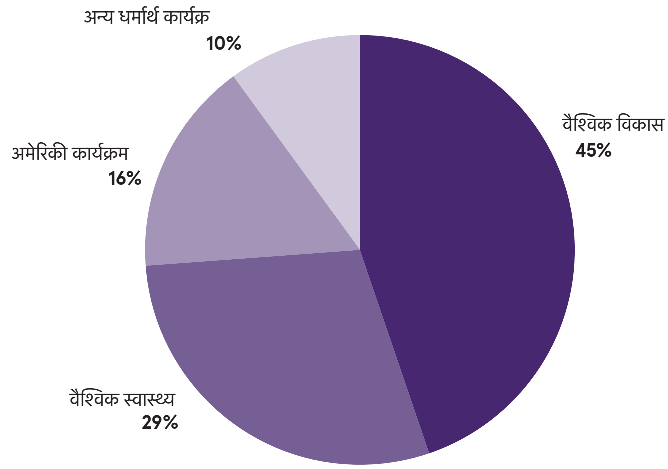

स्रोत: बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन

इस वर्ष के संदेश पत्र में हमने स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में अपने द्वारा किए गए कार्यों का उल्लेख किया है तथा बताया है कि हमें ऐसा क्यों लगता है कि हमने जो जोखिम उठाए हैं, उन्होंने ही हमें भविष्य की प्रगति के लिए तैयार किया है। हमने अपने समक्ष प्राथमिकता बनकर उभरे दो विषयों – जलवायु संकट और लड़के–लड़कियों के बीच समानता के बारे में भी लिखा है और बताया है कि किस तरह ये दोनों अगले 20 वर्षों में हमारे लिए मायने रखेंगे।

परोपकारियों के रूप में हमने जो शुरुआती निवेश किया था उसका लक्ष्य वैश्विक स्वास्थ्य से जुड़ी असमानताओं में सुधार लाना था। इसलिए, हम भी अपने संदेश पत्र की शुरुआत यहीं से करेंगे।

वैश्विक स्वास्थ्य

मिलिंडा : जब हमने पहले–पहल वैश्विक स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करना शुरु किया था, तो हम यह जानकर हैरान रह गए थे कि निम्न आय वाले देशों में कितने ज्यादा बच्चों की मौत आज भी उन बिमारियों से हो जाती है, जिनकी रोकथाम ऐसे टीकों से की जा सकती है, जो अमेरिका जैसे देशों में बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं। इससे हम इस नतीजे पर पहुंचे कि गरीबी और बीमारियों की चुनौतियां एक–दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

बाजार और सरकारें क्योंकि इस मामले को अपने बूते पर हल नहीं कर रहे थे, ऐसे में हमें लगा कि यह परोपकार के लिए आर्थिक सहायता देने का अवसर भी हो सकता है।

हमने वैक्सीन एलायंस–गवी का गठन करने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व बैंक, यूनिसेफ के साथ मिलकर कार्य किया है। गवी वैक्सीन खरीदने और निम्न आय वाले देशों की सहायता करने के लिए सरकारों और संगठनों को एक साथ लाता है, जो इन्हें बच्चों तक पहुंचाते हैं।

बिल:
शब्दों का पेचीदा मिश्रण!

बिल : दूसरे विश्व युद्ध के बाद राष्ट्रों के बीच आर्थिक एवं सैन्य सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र, डब्ल्यूएचओ और नेटो सहित अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के गठन के लिए विश्व एकजुट हुआ था। गवी बच्चों का टीकाकरण करने के लिए इसी तरह का सहयोग जुटाने का अवसर था।

हमें यह भी ठीक से नहीं मालूम था कि हमारी अपेक्षाएं क्या हैं । माइक्रोसॉफ्ट की बदौलत मैं नया संगठन शुरु करने के जोखिमों से परिचित था। हालांकि गवी के मामले में हम जो जोखिम उठा रहे थे, वे अलग किस्म के थे। कोई नया उत्पाद बाजार में उतारने और ग्राहकों से अनुरोध करने की बजाए, हम दुनिया में यह साबित करने की कोशिश कर रहे थे कि टीकों के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी केवल संभव ही नहीं है, बल्कि आवश्यक भी है।यदि हम नाकाम रहते, तो हम सरकारों और वित्तीय सहायता देने वाले अन्य संगठनों को भविष्य के प्रयासों में निवेश करने से हतोत्साहित कर सकते थे।

सवाल कई थे। क्या हम इतना धन जुटा पाएंगे कि विनिर्माताओं को विकासशील देशों के खरीदने के सामर्थ्य के मुताबिक टीकों की आपूर्ति करने को राजी कर सकें? और यदि हम ऐसा कर भी लें, तो क्या हम बच्चों को नए और कम उपयोग किए टीके लगाने जैसे मुश्किल काम के लिए देशों को राजी कर सकेंगे?

मिलिंडा:
पेंटा = ग्रीक में 5

दोनों सवालों का जवाब प्रबल हां के रूप में सामने आया। 2019 तक, गवी ने 760 मिलियन से ज्यादा बच्चों को टीके लगाने और 13 मिलियन मौतों को टाल पाने में सफलता हासिल की। इसने कीमतों में कमी लाते हुए अधिक मात्रा में टीकों और आपूर्तियों को बाजार में उतारने में सफलता प्राप्त की है। उदाहरण के लिए पांच खतरनाक संक्रमणों से

बचाव करने वाले पेंटावेलेंट टीके की एक खुराक की कीमत 3.65 डॉलर थी, जो अब घटकर एक डॉलर से भी कम हो चुकी है।

मिलिंडा : आज दुनिया भर के 86 प्रतिशत बच्चों को बुनियादी टीके लगाए जाते हैं। ऐसा पहली बार हुआ है, जब इतनी बड़ी संख्या में टीके लगाए गए हैं।

लेकिन शेष 14 प्रतिशत तक पहुंच कायम करना 86 प्रतिशत तक पहुंच कायम करने से ज्यादा मुश्किल है।इस वर्ग के बच्चों में कुछ दुनिया के सबसे हाशिए पर मौजूद बच्चे हैं ।

उनमें से कुछ बच्चे बेहद नाजुक क्षेत्रों में रहते हैं, जहां जारी संघर्ष स्वास्थ्य प्रणाली को किसी के भी लिए अच्छे से कार्य करने से रोकते हैं। अन्य बच्चे दूर–दराज के क्षेत्रों में रहते हैं। निराशाजनक बात यह है कि इनमें कुछ बच्चे तो स्वास्थ्य केंद्र से महज सौ मीटर की दूरी पर रहते हैं, लेकिन स्वास्थ्य प्रणाली के लिए अदृश्य हैं। (पिक्चर, उदाहरण के तौर पर, वर्तमान में नैरोबी या रियो डि जनेरियो के भीड़भाड़ वाले गरीब इलाकों में रहने वाले प्रवासियों के बच्चे) गवी अब ऐसे जिलों तक पहुंच बनाने के लिए देशों के साथ मिलकर कार्य करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, जहां टीकों से वंचित बच्चे बड़ी तादाद में मौजूद हैं।

अब जबकि गवी अगले पांच वर्षों के अपने कार्य के लिए धन जुटा रहा है, हम और ज्यादा दानदाताओं को प्रोत्साहित करना चाहते हैं ताकि वे सफलता की इस अविश्वसनीय गाथा को सभी बच्चों तक पहुंचाने की प्रतिबद्धता व्यक्त करें। ज्यादा धन प्राप्त होने से गवी और ज्यादा जिंदगियां बचाने में समर्थ हो सकेगा। हमें लगता है कि गवी जैसा बड़ा कदम उठाने का फैसला हमारे द्वारा किए गए बेहतरीन निर्णयों में से एक है और हम अपने निवेश के लाभ देखकर उत्साहित हैं।

बिल: टीकों पर किया गया हमारा कार्य एक अन्य क्षेत्र : एचआईवी और एड्स में हमारे द्वारा किए गए कार्यों के बराबर है, जिससे हम शुरुआत से जुड़े हैं।

जब हमारे फाउंडेशन की शुरुआत हुई, तो उस समय नए उपचारों की बदौलत समृद्ध देशों में एड्स से होने वाली मौतों की तादाद में कमी आनी शुरु हो गई थी। लेकिन टीकों के समान ही उच्च आय वाले देशों में मौजूद जीवन रक्षक उपकरण निम्न आय वाले देशों में उपलब्ध नहीं थे। उप–सहारा देशों में अनेक नए प्रकार के संक्रमण तेजी से फैल रहे थे। मुझे याद है कि मैंने न्यूजवीक में एक दहला देने वाला लेख पढ़ा था कि किस तरह यह वायरस बच्चों की एक पूरी पीढ़ी को अनाथ बना देगा।

न्यूजवीक कवर
17 जनवरी, 2000

बढ़ती महामारी से निपटने साथ ही साथ दो बड़े जानलेवा रोगों से बचाव के मद्देनजर हमने 2002 में एक नए संगठन –ग्लोबल फंड टू फाइट एड्स, ट्यूबरक्लोसिज एंड मलेरिया के गठन में मदद की। इसके लक्ष्य भी गवी के ही समान थे : निम्न आय वाले देशों में जीवन रक्षक दवाएं, प्रौद्योगिकियां और कार्यक्रम पहुंचाना। उन्हीं कारणों से ही यह भी सबके लिए जोखिम पूर्ण था।

लेकिन गवी की तरह ही, ग्लोबल फंड को भी अपार सफलता प्राप्त हुई। अकेले 2018 में ही, जिन देशों में इस संगठन ने निवेश किया था, वहां लगभग 19 मिलियन लोगों को जीवनरक्षक एचआईवी उपचार प्राप्त हुआ।

ग्लोबल फंड की स्थापना के साथ ही हमने जान लिया कि विश्व में नवाचारों को उनकी जरूरत वाले स्थानों तक पहुंचाने

मिलिंडा:
बेसबॉल की उपमा का उपयोग जारी रखते हुए हमारा मानना है कि गवी और ग्लोबल फंड वैश्विक स्वास्थ्य के ग्रेंड स्लैम हैं!

बिल:
इसने मलेरिया और तपेदिक या टीबी से होने वाली मौतों की संख्या में कमी लाने में भी अहम भूमिका निभाई है।

की प्रक्रिया मौजूद है। इसलिए ग्लोबल फंड को सहायता देने के साथ—साथ हमारे फाउंडेशन ने नए साधनों के विकास में निवेश किया।

शुरुआत में, हमने ऐसे एचआईवी निवारकों यानी प्रीवेंटेटिव्स में काफी संसाधन लगाए, जिन्हें रोजाना लेने की जरूरत थी। कई कारणों से उनके नतीजे हमारी उम्मीद के मुताबिक नहीं रहे।

मिलिंडा:
बहुत ही निराशाजनक आघात है।

उदाहरण के लिए, हमें उम्मीद थी कि वेजाइनल जेल से संक्रमण की रोकथाम हो सकती है, लेकिन वे इस रोग का संक्रमण रोकने में कारगर नहीं थे। दूसरी ओर, एक निवारक गोली या प्रीवेंटेटिव पिल थी, जो निरंतर खाने पर इस रोग से बचाव में 99 प्रतिशत कारगर थी, लेकिन निम्न आय और मध्यम आय वाले देशों में इस रोग की रोकथाम की दृष्टि से यह कुछ खास नहीं कर सकी। स्थानीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों ने प्रतिदिन ली जाने वाली इस गोली को उपलब्ध कराने की जद्दोजहद ऐसे तरीके से की, जो आकर्षक और लोगों के जीवन के अनुरूप था।

आज हम दीर्घकालिक निवारकों यानी लॉन्गर लास्टिंग प्रीवेंटेटिव्स पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। कल्पना कीजिए कि यदि किसी को रोजाना एक गोली खाने के स्थान पर हर दूसरे महीने में एक इंजैक्शन लगवाना हो, अपनी बाजू में इम्प्लैन्ट लगवाना हो या वायरस से संक्रमित होने का जोखिम पूरी तरह खत्म कराने के लिए वैक्सीन लगवाना हो।

हमारा फाउंडेशन लॉन्गर लास्टिंग उपचारों के विकल्पों पर भी ध्यान दे रहा है। इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की बदौलत, उपचार करवा रहे एचआईवी पॉजिटिव व्यक्ति का जीवन काल भी सामान्य व्यक्ति जितना हो सकता है। लेकिन, आज के दौर के प्रीवेंटेटिव्स की ही तरह, दवाएं रोजाना लेनी होंगी। हम ऐसे उपचारों की तलाश कर रहे हैं, जिन्हें बार—बार न लेकर, कम से कम साल भर के फासले पर लेना पड़ता हो।

यदि हम दीर्घकालिक विकल्पों में माहिर हो भी जाएं, तो भी इस संक्रामक बीमारी पर काबू पाने के लिए हमें अनेक चुनौतियों का सामना करना होगा।

दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन में पिछले साल गुगुलेथु सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के दौरे के समय कर्मचारी हमें एचआईवी और तपेदिक या टीबी के अपने मरीजों के बारे में जानकारी दे रहे हैं।

मिलिंडा : 2003 में, हमने बोत्सवाना की एक एचआईवी क्लीनिक का दौरा किया था, जो उस समय उस महाद्वीप की सबसे बड़ी एचआईवी क्लीनिक्स में से एक थी। यह यात्रा हमें हमेशा याद रहेगी, क्योंकि यहीं हमें इस रोग के सामाजिक और ढांचागत कारणों के बारे में गंभीर सबक मिला था।

हमने वहां एक डच डॉक्टर से मुलाकात की जिसने हमें बोत्सवाना की एक स्थानीय महिला के बारे में बताया। वह और उनकी पत्नी उस महिला के घर पर काम करते थे। एक दिन उस महिला ने उन्हें बताया कि वह अपने गांव जा रही है, फिर वह कभी लौटकर नहीं आई। जब उस दम्पत्ति ने उस महिला की तलाश करनी शुरु की तो वे यह जानकर हैरान रह गए कि उसकी एड्स के कारण मौत हो चुकी थी।

उन्हें इस बात से हैरानी नहीं हुई कि वह महिला एड्स से पीड़ित थी। बल्कि हैरानी की बात यह थी कि क्लीनिक में उसका सम्पर्क था और वह वहां उपलब्ध बेहतरीन सेवाएं हासिल कर सकती थी। इसके बावजूद उसकी मौत बिना इलाज के हो गई। लेकिन एड्स के बारे में इसी तरह का विनाशकारी कलंक मौजूद था। जो पूरी तरह घातक साबित हो सकता है।

यह कहानी हम कभी नहीं भुला सके।इस संक्रामक रोग के बारे में हमारी समझ को उलझाते हुए इसने हमारे कॉल टू

एक्शन को स्पष्ट कर दिया।

वास्तविकता यह है कि एचआईवी के खिलाफ संघर्ष में केवल बायोमेडिकल हस्तक्षेप कभी पर्याप्त नहीं होंगे। हमें इस बात पर भी गौर करने की जरूरत है कि लोगों के लिए क्या मायने रखता है, कौन सी चीज उन्हें निवारक और उपचार सेवाएं प्राप्त करने से रोक रही है और क्लीनिकल ट्रायल्स में कारगर साबित होने वाले उपकरण उनकी रोजमर्रा की जिंदगी में कोई अंतर नहीं ला पाते।

मिसाल के तौर पर, हम जानते हैं कि दक्षिणी और पूर्वी अफ्रीका में, किशोरियां और युवतियां असंगत रूप से बड़ी संख्या में नए एचआईवी संक्रमणों के लिए उत्तरदायी हैं। गरीबी, हिंसा और जेंडर से जुड़े मानक हैं।

एचआईवी से युवतियों के संक्रमित होने की आशंका अधिक होती है।

पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका में एचआईवी संक्रमण के हजारों नए मामले कम उम्र वालों (15-24) के बीच में हैं।

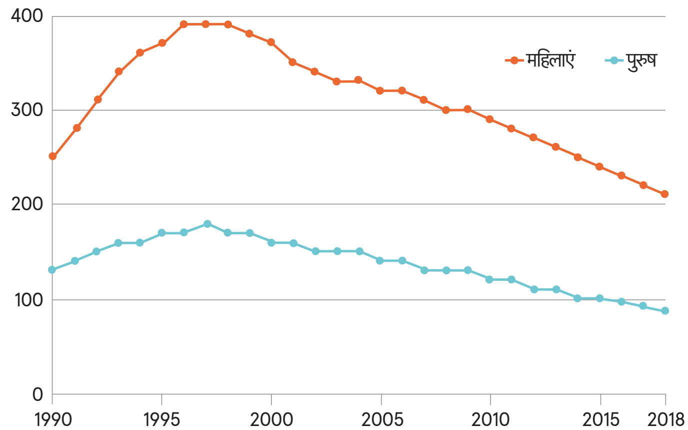

स्रोत: यूएनएआईडीएस

लेकिन इसके बावजूद हम जानते हैं कि इन लड़कियों के बारे में बहुत कुछ ऐसा है, जिसकी जानकारी हमें नहीं है। हम अपने नजरिए से देखते हैं कि वे कैसा जीवन बिताती हैं। इस बारे में हमारे पास पर्याप्त आंकड़े नहीं हैं कि वे दुनिया को किस नजरिए से देखती हैं। यही बात उनके लिए कारगर बायो मेडिकल और अन्य समाधान विकसित करने की हमारी योग्यता को बाधित करती है।

खुशकिस्मती से, अनुसंधानों में इस वास्तविकता पर गौर किया जाने लगा है। पिछले अक्टूबर को जब मैं जोहानसबर्ग में थी, तो मैंने फाउंडेशन के साझेदार के साथ वक्त बिताया था, जो आंकड़ो की इस कमी को दूर करने तथा उनकी जरूरतों के मुताबिक उपचार और निवारक सेवाओं को नए सिरे से तैयार करने के लिए किशोरियों और युवतियों के साथ मिलकर कार्य कर रहे थे।

हमारे फाउंडेशन ने अमेरिकी सरकार द्वारा समर्थित ड्रीम्स कार्यक्रम के साथ भी साझेदारी की, जो डिटर्मिन्ड रिज़िल्यन्ट इम्पाउअर्ड एड्स–फ्री मेन्टर्ड एंड सेफ का परिवर्णी शब्द यानी ऐक्रनिम है। जैसा कि नाम से ही जाहिर है यह कार्यक्रम एच आई वी निवारण के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाता है। मिसाल के तौर पर यह वित्तीय साक्षरता, उद्यमिता और जेंडर आधारित हिंसा से जुड़े मामलों का समाधान भी करता है-जो सभी महिलाओं और लड़कियों को स्वस्थ, सम्पन्न और एच आई वी मुक्त जीवन बिताने में मदद कर सकता है।

पिछले 20 साल से विज्ञान ने एच आई वी से निपटने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। महत्वपूर्ण बात यह है कि आगे बढ़ने में विज्ञान को उपयोग में लाने के बारे में विश्व की समझ भी तेजी से बढ़ रही है।

बिल: हमारा फाउंडेशन वैश्विक स्वास्थ्य पर हमेशा ध्यान केंद्रित करता रहेगा। भविष्य में यह कार्य और भी महत्वपूर्ण होता जाएगा, क्योंकि जलवायु परिवर्तन के कारण ज्यादा से ज्यादा लोग इस बीमारी से प्रभावित होंगे। (इस पत्र में आगे चलकर इस बारे में मुझे कुछ और भी कहना है।)

टीकों और एचआईवी में निवेश के साथ साथ हम मलेरिया, तपेदिक और पोलियो (ग्लोबल पोलियो इनिशिएटिव के साथ हमारी साझेदारी के माध्यम से)जैसी अन्य बीमारियों की दिशा में हो रही प्रगति में सहायता प्रदान करते रहेंगे। हम परिवार नियोजन तथा मातृ एवं नवजात शिशु स्वास्थ्य में नई प्रगति में वित्तीय सहायता देंगे और हम कुपोषण के अभिशाप की रोकथाम के नए रास्ते तलाशेंगे।

इसका कारण यह है कि स्वास्थ्य में सुधार लोगों को गरीबी के चंगुल से बाहर निकालने की कुंजी है। जैसे – जैसे लोग स्वस्थ होते जाएंगे, उनका जीवन अन्य तरीकों से बेहतर होता जाएगा। इसके परिणामस्वरूप विश्व बेहतर और ज्यादा समान बनता जाएगा।

शिक्षा

बिल:
हम बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा और इकॉनोमिक मोबिलिटी फ्रॉम पावर्टी पर भी काम करते हैं।

मिलिंडा: बिल और मैं हमेशा से जानते थे कि अमेरिका में हमारे फाउंडेशन के ज्यादातर कार्य के–12 और माध्यमिक शिक्षा से आगे की पढ़ाई पर केंद्रित होंगे। अमेरिका में सफलता जाति, जेंडर, जिप कोड, अभिभावकों की आय के स्तर जैसी विविधताओं वाला एक जटिल समीकरण है, लेकिन शिक्षा उस समीकरण का एक महत्वपूर्ण अंग है।

हम दोनों को बेहतरीन विद्यालयों में पढ़ने का अवसर मिला है और हमें मालूम था कि हमारे लिए कितने दरवाजे खुले हैं। हम इस बात से भी अवगत हैं कि लाखों अमेरिकी, खास तौर पर निम्न आय वाले छात्रों और अश्वेत छात्रों के पास ऐसे अवसर उपलब्ध नहीं हैं।

बेशक इस स्थिति को बयान करने के लिए विशेषज्ञों के पास ज्यादा कड़ी शब्दावली है। 2001 में मेरी मुलाकात डेब्रा मीयर नाम की एक शिक्षाविद् से हुई, जिनका मुझ पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उनकी पुस्तक, उनके विचारों की ताकत ने मुझे यह समझने में सहायता की कि पब्लिक स्कूल केवल महत्वपूर्ण समकारी या इक्वलैज़र ही नहीं हैं, बल्कि उन्नतिशील लोकतंत्र के संचालक भी हैं। वह लिखती हैं कि लोकतंत्र के लिए सभी की समान भागीदारी की आवश्यकता होती है। इसका आशय है कि जब हमारे पब्लिक स्कूल छात्रों को सार्वजनिक जीवन में भाग लेने के लिए तैयार करने में विफल रहते हैं, तो वे हमारे देश को भी नाकाम कर देते हैं।

मैंने इस बारे में काफी सोच–विचार किया। इससे मुझे इस कार्य के सिद्धांतों को ग्रहण करने में मदद मिली।

अगर आपने 20 साल पहले हमसे पूछा होता, तो हमने अनुमान लगाया होता कि वैश्विक स्वास्थ्य हमारे फाउंडेशन का सबसे जोखिम भरा कार्य है और हमारा अमेरिकी शिक्षा संबंधी कार्य यकीनन सफल है। वास्तविकता तो यह है कि नतीजा इसके उलट साबित हुआ है।

वैश्विक स्वास्थ्य के मामले में इस बात के पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं कि बाल मृत्यु दर में जबरदस्त कमी के साथ विश्व सही रास्ते पर है। हालांकि जहां तक अमेरीकी शिक्षा की बात है, तो समग्र प्रभाव हमारी अपेक्षा के अनुसार नहीं रहा। यथा स्थिति अभी तक अमेरिकी छात्रों को असफल कर रही है।

इस पर विचार कीजिए: एक औसत अमेरिकी प्राथमिक विद्यालय की कक्षा में 21 छात्र होते हैं। वर्तमान में, इन 21 में से 18 छात्रों ने डिप्लोमा या समकक्ष के साथ माध्यमिक शिक्षा उत्तीर्ण की है।(जो 2000 के बाद से महत्वपूर्ण सुधार है), लेकिन उनमें से केवल 13 छात्र ही पास होने के एक साल के भीतर ही माध्यमिक शिक्षा से आगे की पढ़ाई शुरू करते हैं। केवल सात छात्र ही छह साल के भीतर चार साल के कार्यक्रम से डिग्री हासिल करते हैं।

अश्वेत छात्र पीछे रह गए हैं।

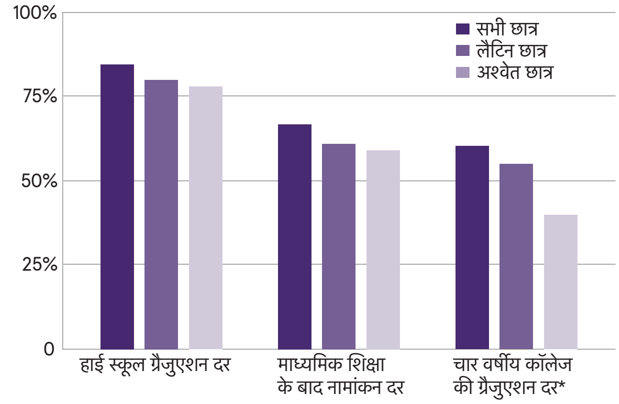

स्रोत : नेशनल सेंटर फॉर एजुकेशन स्टटिस्टिक्स
* चार–वर्षीय कॉलेज से छह साल के भीतर ग्रैजुएशन

जाति के आधार पर अलग करके देखने पर हालात और भी खराब हो जाते हैं। यदि हमारी कक्षा का प्रत्येक विद्यार्थी लैटिन है, तो छह साल के भीतर केवल छह छात्र ही अपना चार साल का डिग्री कार्यक्रम पूरा करेंगे। अश्वेत छात्रों की कक्षा में यह संख्या घटकर महज चार रह जाती है।

हालांकि हमारी उम्मीद के मुताबिक प्रगति हासिल करना मुश्किल होने के बावजूद पीछे हटने का कोई कारण नहीं है। इसके विपरीत हमारा मानना है कि सब कुछ नहीं कर पाने के जोखिम से हम छात्रों को व्यापक रूप से उनकी क्षमताओं तक पहुंचने में मदद कर सकते हैं।

> “प्रगति हासिल करना हमारी उम्मीद से कहीं ज्यादा मुश्किल रहा है, यह तथ्य हमारे हार मान लेने का कारण हरगिज नहीं है, हालांकि इसके बिल्कुल विपरीत है।”

हम निश्चित रूप से समझते हैं कि अरबपति परोपकारियों द्वारा क्लासरूम नवाचार या शिक्षा नीति निरुपित किए जाने को अनेक लोग संशय से क्यों देखते हैं। स्पष्ट रूप से कहें, तो हम भी ऐसा ही करते हैं। बिल और मेरा हमेशा से यही मानना रहा है कि हमारी भूमिका अपने आप विचार सृजित करने की नहीं है, बल्कि शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वाले : शिक्षकों, प्रशासकों, शोधकर्ताओं और सामुदायिक नेताओं जैसे लोगों द्वारा किए गए नवाचारों में सहायता देने की है।

लेकिन एक बात जो शिक्षा में सुधार लाने को पेचीदा बनाती है, वह यह है कि इस मामले पर कार्य करने वाले लोगों के बीच भी इस बारे में ज्यादा सहमति नहीं है कि कौन का कदम कारगर है और कौन सा नहीं।

वैश्विक स्वास्थ्य के क्षेत्र में, हम जानते हैं कि यदि बच्चों को खसरे का टीका लगाया जाएगा, तो उनका उस बिमारी से बचाव हो जाएगा, जिसका आशय है कि उनके जीवित बचने की संभावना अधिक होगी। लेकिन शिक्षा के उद्देश्य और प्रभाव के बारे में सर्वसम्मति नहीं है। चार्टर स्कूल अच्छे होते हैं या खराब? स्कूल का समय कम होना चाहिए या ज्यादा? यह खण्डों के लिए तैयार किया गया सबक उनसे बेहतर है? शिक्षाविद् स्पष्ट उत्कृष्ट पद्धतियों को स्थापित करने के लिए इन सवालों के जवाब स्पष्टता के साथ नहीं दे सके हैं।

किसी अकेले हस्तक्षेप को अलग–थलग करना और उसे बहुत महत्वपूर्ण करार देना भी बेहद मुश्किल है। किसी बच्चे को हाई स्कूल पास करने के लिए सैंकड़ो योग्य शिक्षकों, प्रशासकों और स्थानीय, राज्य तथा राष्ट्रीय नीतिनिर्माताओं के कम से कम 13 वर्षों तक निर्देश प्राप्त करने की जरूरत होती है। अंतिम निष्कर्ष को बदल डालने वाली यह प्रक्रिया निरंतर बढ़ने वाली है, जिसे विभिन्न अवस्थाओं पर हस्तक्षेप की जरूरत होती है।

इतना ही नहीं, हमने प्रगति के कुछ चिन्ह भी देखे हैं। अन्य बातों के साथ–साथ हमने पाठ्यक्रम में सुधार लाने, बच्चों को शिक्षा अधूरी छोड़ने से रोकने के बारे में जानने तथा इस बारे में अपनी समझ को व्यापक बनाने कि किसी महान शिक्षक को और ज्यादा महान बनाने और अच्छे शिक्षक को बेहतर बनाने के लिए किन बातों की जरूरत होती है, (बिल ने और ज्यादा आशावादी बनने के लिए नीचे और भी कारण दिए हैं।) में सहायता की है।

बिल:
यह हमारे अब तक के सबसे सन्तोषजनक कार्यों में से एक था।

हमें 20,000 अश्वेत छात्रों को कॉलेज की पूर्ण छात्रवृत्ति उपलब्ध कराने वाले हमारे गेट्स मिलिनियम स्कॉलर्स प्रोग्राम पर भी गर्व है। हमें इनमें से कुछ स्कॉलर्स से मुलाकात करने का अवसर मिला और यह हमेशा बहुत दिल को छू लेने वाला अनुभव रहा है। काएरा कैली नाम की एक छात्रा ने मुझे बताया, गेट्स मिलिनियम स्कॉलर बनने से पहले उसने "कभी कॉलेज जाने की कल्पना तक नहीं की थी।" जब मेरी उससे मुलाकात हुई, तब वह स्नातकोत्तर डिग्री हासिल करने के लिए पढ़ाई कर रही थी और इस बारे में उत्साहपूर्वक योजनाएं बना रही थी कि उस पर किए गए निवेश को कैसे आगे बढ़ाना है ।

इन छात्रवृत्तियों की बदौलत उन 20,000 छात्रों के जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव आया, लेकिन हकीकत तो यह है कि पिछले 16 साल के दौरान अमेरिकी पब्लिक स्कूलों से पास होने वाले लाखों अन्य छात्रों को भी हमने छात्रवृत्ति प्रदान की। इसका मतलब है कि हम उनके केवल छोटे से प्रतिशत तक ही पहुंच बना पाए हैं। हमारा लक्ष्य अमेरिका के समस्त छात्रों के जीवन में बड़ा बदलाव लाना है, इसलिए हमने अपना अधिकांश कार्य छात्रवृत्तियों से लेकर और अधिक छात्रों के जीवन को प्रभावित कर सकने वाले क्षेत्रों में केंद्रित किया है।

काएरा जैसी युवती को अपने सामर्थ्य का उपयोग करते देखना बेहद अविश्वसनीय होगा। साथ ही यह प्रत्येक छात्र को समान अवसर उपलब्ध कराना सुनिश्चित करने वाली पब्लिक स्कूल प्रणाली को सहायता देने की हमारी प्रतिबद्धता को भी सुदृढ़ बनाएगा।

बिल : तो हम छात्रों को उनकी शिक्षा और उन्नति के लिए आवश्यक साधनों से कैसे सम्पन्न कर सकते हैं? हमने अपने कार्य के आरंभिक दौर में ही जान लिया था कि छात्रों को अपनी शिक्षा में महारत हासिल करने के लिए साल दर साल स्पष्ट और समान मानकों की जरूरत होती है।

हमने कॉमन कोर मानकों पर बड़ा दांव लगाया। लगभग प्रत्येक राज्य ने उनके जारी होने के दो साल के भीतर ही उन्हें अपना लिया। लेकिन यह जल्द ही स्पष्ट हो गया कि केवल अपनाना ही काफी नहीं होगा– इस बात का अंदाजा हमें पहले हो जाना चाहिए था। हमने सोचा कि यदि राज्यों ने मानकों में वृद्धि की, तो बदले में बाजार में उनकी प्रतिक्रिया होगी और उन मानकों के अनुरूप नई शिक्षण सामग्री तैयार की जाएगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, इसलिए हमने बाजार को प्रोत्साहित करने के रास्ते तलाशने शुरु किए।

जब शिक्षकों ने हमें बताया कि उनके पास यह पता लगाने का कोई साधन नहीं है कि पाठ्य पुस्तकें नए मानकों के अनुरूप हैं या नहीं, तो हमारे फाउंडेशन ने शिक्षण सामग्री के लिए एडरिपोर्ट्स नामक एक गैर–लाभकारी संगठन को समर्थन देना शुरु किया, जो कन्ज्यूमर रिपोर्ट्स की तरह ही कार्य करता है। अब शिक्षक पाठ्य पुस्तकों को देख कर यह पता लगा सकते थे कि वह उच्च गुणवत्ता और मानकों के अनुरुप है या नहीं। स्कूलों ने इन समीक्षाओं और विनिर्माताओं के आधार पर ज्यादा से ज्यादा ऐसी सामग्री की खरीद करनी आरंभ कर दी, जो छात्रों के के लिए अधिक उपयोगी थी, बदले में ज्यादा से ज्यादा बेहतर पाठ्य पुस्तक विकल्पों का सृजन होना शुरु हो गया।

पाठ्य पुस्तकों से परे, हम जानते थे कि हमें छात्रों और शिक्षकों की बेहतर ढंग से सहायता करने के लिए अन्य रास्ते तलाशने होंगे। मिसाल के तौर पर, नयी अपेक्षाओं की पूर्ति करने के लिए आवश्यक संसाधनों तक अनेक शिक्षकों की पहुंच नहीं थी। इसलिए हमने उन्हें प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करने के तरीकों की तलाश करनी शुरु की।

लेकिन 20 साल बाद शिक्षा के बारे में हमने अगर कोई एक सबक सीखा है, तो वह यह है कि समाधानों का आकलन मुश्किल है। शिक्षा के बारे में हमारा अधिकांश शुरुआती कार्य संभवत:ठीक नहीं रहा। परियोजनाओं को लाखों छात्रों तक पहुंचाने के लिए उनका विस्तार करते ही हमने उम्मीद के मुताबिक परिणाम नहीं मिलने पर हमने उन्हें बंद कर दिया।

हमें यह स्पष्ट हो गया कि शिक्षा के क्षेत्र में प्रसार का आशय सभी को समान समाधान उपलब्ध कराना नहीं है। हम जिन स्थानों के शिक्षकों और छात्रों तक पहुंच बनाने की कोशिश कर रहे हैं, हमारा कार्य भी उनकी विशिष्ट जरूरतों के अनुसार होना चाहिए।

हमने अपना ध्यान मुख्य रुप से के–12 समाधानों से हटाकर स्कूलों के नेटवर्क द्वारा चिन्हित स्थानीय जरूरतों के मुताबिक समाधानों पर केंद्रित करना शुरु कर दिया। हमें आशा है कि स्कूलों में सुधार से संबंधित ये नेटवर्क्स हाई स्कूल पास करने और माध्यमिक शिक्षा से आगे की पढ़ाई करने वाले अश्वेत, लेटिन और कम आय वाले छात्रों की संख्या में वृद्धि करेंगे।

अब तक हमने 30 नेटवर्क्स को 240 मिलियन डॉलर की राशि प्रदान की है। इनमें से अनेक नेटवर्क का गठन क्षेत्र के आधार पर किया गया है। प्रत्येक नेटवर्क में 8 से 20 स्कूल शामिल हैं और चयन के लक्ष्य के प्रति केंद्रित है। मिसाल के तौर पर जो पढ़ाई पूरी करने की 'राह पर नहीं है, उन्हें सही रास्ते पर लाने में मदद करना।

हाई स्कूल का प्रथम वर्ष महत्वपूर्ण समय होता है। प्रथम वर्ष के छात्र के एक कोर्स से अधिक में फेल नहीं होने छात्र के पढ़ाई पूरी करने की सम्भावना 2 या अधिक विषयों में फेल होने वाले छात्रों की तुलना में चार गुना अधिक होती है। इस तरह किसी छात्र के पास होने का अनुमान लगाने के लिए उसकी जाति, धन या परीक्षा में प्राप्त अंकों की तुलना में उसका सही रास्ते' पर होना ज्यादा उचित होगा।

2018 में, मैंने शिकागो के नॉर्थ ग्रैंड हाई स्कूल का दौरा किया था। इस स्कूल में आसपास के संघर्ष और हिंसा, भूख और अन्य चुनौतियों से ग्रसित क्षेत्रों के छात्र पढ़ते थे।इसकी गिनती शहर के सबसे खराब स्कूलों में होती थी।

बिल शिकागो में नॉर्थ–ग्रैंड हाई स्कूल के छात्रों से मुलाकात कर रहे हैं।

उसके बाद नॉर्थग्रैंड नेटवर्क फॉर कॉलेज सक्से में शामिल हो गया। आंकड़ों और नेटवर्क के अन्य स्कूलों से सीखे गये सबक की बदौलत स्कूल ने नौवीं कक्षा के छात्रों को पढ़ाने का तरीका बदल दिया।

यदि आप प्रथम वर्ष के छात्र हैं, तो आपके पहले दिन की शुरुआत एक शिक्षक के साथ होती है, जो आपको संगठनात्मक कौशलों, कॉलेज की योजना और असाइनमेंट्स के लिए स्कूल का लैपटॉप इस्तेमाल करने का तरीका सीखने में मदद करता है। एक ऑनलाइन पोर्टल रोजाना आपको अपने अंक देखने में सहायता करता है। हर पांच हफ्तों में काउन्सलर के साथ आपकी मुलाकात होती है, जिसमें यह पता करने की कोशिश की जाती है कि आपका प्रदर्शन कैसा है और जरुरत पड़ने पर आपको किससे मदद मांगनी चाहिए।

मिलिंडा:
यह हमें आशावादी बनाता है।

स्कूल का यह दृष्टिकोण कारगर रहा। 2018 तक नॉर्थ ग्रैन्ड के प्रथम साल के 95 प्रतिशत छात्र ग्रैजुएशन करने की राह पर थे और उस स्कूल को शहर का बेहतरीन स्कूल करार दिया गया था। नेटवर्क के कई अन्य स्कूलों ने ऐसे कार्यक्रमों को अपनाया और इसी तरह की प्रगति हासिल की।

सभी समस्याओं के लिए एक ही तरह के समाधान पर ध्यान केंद्रित करने की जगह हमारा फाउंडेशन स्कूलों के लिए एक–दूसरे के अनुभवों से सीखने के अवसरों का सृजन करना चाहता है। नॉर्थ ग्रैन्ड में कारगर साबित होने वाला तरीका हर जगह सही साबित नहीं हो सकता। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि अन्य नेटवर्क्स के स्कूल भी अपनी कामयाबी की गाथाएं साझा करें।

मिलिंडा : पिछले 20 साल में हमने वैश्विक स्वास्थ्य और सार्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र की प्रगति को रफ्तार देने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और बढ़ाया है। लेकिन हमने दो अन्य मसलों पर भी अत्यावश्यकता की भावना विकसित की है। बिल के लिए जलवायु परिवर्तन से निपटना और मेरे लिए लड़के–लड़कियों में समानता अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

जब हम आने वाले 20 वर्षों पर गौर करते हैं, तो हमें इन क्षेत्रों में भी जी–जान से कोशिश करनी होगी।

जलवायु

बिल : अपना फाउंडेशन आरंभ करने के बाद मिलिंडा और मैंने लोगों से मुलाकात करने और मामलों के बारे में स्वयं जानकारी लेने के लिए नियमित रूप से निम्न आय वाले देशों का दौरा करना शुरु किया। हमने मलेरिया के बारे में जानने के लिए मोजाम्बिक के मैनहिका जैसे गांवों का दौरा किया और एचआईवी संकट के बारे में स्थानीय नेताओं से मुलाकात करने के लिए नाइजीरिया के लागोस जैसे शहर का दौरा किया।

हम स्वास्थ्य के बारे में जानकारी जुटाने के लिए उन जगहों पर गए थे, लेकिन मैं सिर्फ बीमारियों के बारे में ही नहीं सोच रहा था। अनेक स्थानों का दौरा करने पर एक बात जिसने मेरा ध्यान खींचा, वह था कि वहां बिजली बहुत कम थी। दिन ढलने के बाद पूरा गांव अंधकार में डूब जाता था। मुझे याद है कि मैंने लागोस की अंधेरी सड़कों पर लोगों को तेल के पुराने बैरलों में आग जलाकर उसके गिर्द बैठे देखा था। मुझे याद है कि उस समय मेरे जहन में ख्याल आया था कि हमें इस बारे में कुछ करना चाहिए।

नाइजीरिया के लागोस में लोग अलाव के पास झुंड बनाकर बैठे हैं।

मैं उस समय तो नहीं जानता था, लेकिन वह जलवायु परिवर्तन पर काम करने की मेरी यात्रा की शुरुआत थी।

जो स्थिति हमने देखी उसे "ऊर्जा निर्धनता" कहते है जो दुनिया भर के 860 मिलियन लोगों की असल समस्या है। हमारा आधुनिक विश्व बिजली पर निर्भर है। इसके बिना आपका जीवन अंधकार में (सही मायनों में)डूब जाता है। इसलिए मैंने विशेषज्ञों के साथ इस बारे में चर्चा करनी शुरू की कि इस मसले पर और क्या कदम उठाया जा सकता है।

860 मिलियन लोगों की बिजली तक विश्वसनीय पहुंच नहीं है

स्रोत : अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी

दो तथ्य जल्दी ही स्पष्ट हो गए। पहला, यदि सभी को भरोसेमंद रूप से बिजली मिले, तो विश्व समृद्ध और ज्यादा उचित स्थान बन जाएगा। दूसरा, हमें जलवायु परिवर्तन में योगदान दिए बगैर ऐसा करने का रास्ता तलाशना होगा।

यह लगभग 14 साल पहले की बात है। तब से मैंने ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाने और लोगों को जलवायु परिवर्तन के अनुरूप ढालने के लिए नए विचारों का पता लगाने पर बहुत सारा समय और संसाधन खर्च किए हैं।

बरसों पहले जब वॉरेन ने मिलिंडा और मुझसे जी–जान से प्रयास करने का अनुरोध किया था, तो उनका इशारा जलवायु परिवर्तन की ओर नहीं, बल्कि उन क्षेत्रों की ओर था, जिनके बारे में उन दिनों हमारा फाउंडेशन कार्य कर रहा था। लेकिन उनकी सलाह इस विषय पर भी लागू होती है। बड़े दांव लगाए बिना विश्व जलवायु परिवर्तन की समस्या का समाधान नहीं कर सकता।

जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने के लिए ऐतिहासिक स्तर के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, अर्थव्यवस्था के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व मात्रा में नवाचार, सौर और पवन जैसे वर्तमान दौर के स्वच्छ ऊर्जा समाधानों का व्यापक उपयोग तथा धरती के बढ़ते तापमान से सर्वाधिक प्रभावित होने लोगों के साथ मिल–जुलकर कार्य करने के प्रयासों की जरूरत होगी। जब तक हम यह तय नहीं करेंगे कि हमें क्या और कैसे करना है, तब तक ऐसा नहीं हो सकता।

दूसरे शब्दों में कहें, तो हमें योजना बनाने की जरूरत है।

सुखद बात तो यह है कि हमारे पास पहले से ही कुछ करने की महत्वाकांक्षा और लक्ष्य मौजूद है,जिन्हे हासिल करने के लिए हमें कार्य करना है। जलवायु परिवर्तन के प्रति हमारी महत्वाकांक्षा पिछले पतझड़ के दौरान हुई जलवायु परिवर्तन संबंधी हड़तालों सहित हमारी जबरदस्त सक्रियता से प्रमाणित होती है। जहां तक लक्ष्यों का प्रश्न है, हम पेरिस समझौते तथा 2050 तक गैसों का उत्सर्जन पूरी समाप्त करने की प्रतिबद्धता व्यक्त करने वाले समस्त देशों, शहरों और राज्यों का आभार प्रकट करते हैं।

तो, उत्सर्जन पूरी तरह समाप्त करने का लक्ष्य हासिल करने के लिए क्या योजना बनाई जानी चाहिए? इसका उत्तर भी उस समस्या जितना ही जटिल है, जिसे हल करने की कोशिश हम कर रहे हैं।, लेकिन इसका संक्षिप्त संस्करण दो हिस्सों में विभाजित है : कमी लाना और अनुकूलन।

बिल:
बिल्कुल उत्सर्जन नहीं करने वाले ऊर्जा के विश्वसनीय स्रोतों सहित, जो इतने किफायती हैं कि उन्हें कम आय वाले देशों में उपयोग में लाया जा सकता है।

कमी लाने का आशय सिर्फ ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाने से है। ऐसा करने की कुंजी यही है कि कारगर उपायों के मिश्रण को लागू किया जाए और जिन प्रौद्योगिकियों की हमें अब तक जरूरत है, उनका सृजन किया जाए और उनकी संख्या बढ़ाई जाए।

जब भी जलवायु परिवर्तन की समस्या के समाधान की चर्चा की जाती है, तो आमतौर पर ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है–जो एक अच्छी बात है! हमें अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में जीरो–कार्बन विकल्पों की जरूरत है, जिनमें से अधिकांश का तो अब तक वजूद तक नहीं है। उत्सर्जन में कमी लाना अब तक की सबसे बड़ी समस्या है, जिसका हल हमें तलाशना है और उत्सर्जन को पूरी तरह समाप्त करने के लिए जितनी ऊर्जा लगाई जा रही है, उसे देखना बहुत ही सुखद है। (मुझे इस बात की भी उम्मीद है कि इस स्थान में किए जा रहे नवाचारों से ज्यादा से ज्यादा लोगों को बिजली उपलब्ध होगी।)

लेकिन जलवायु परिवर्तन की समस्या के समाधान के लिए केवल उत्सर्जन में कमी लाने से ही बात नहीं बनेगी। हमें अनुकूलन पर भी बल देना होगा।

मिलिंडा:
जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति महिलाएं विशेष रूप से सबसे ज्यादा असहाय हैं।

धरती के बढ़ते तापमान का असर दुनिया भर के लोगों पर पहले से ही पड़ना शुरु हो चुका है। आने वाले वर्षों में यह प्रभाव और भी विकट रूप धारण करता जाएगा। क्रूर विडम्बना यह है कि दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन में सबसे कम योगदान देने वाले निर्धनतम लोग ही इससे सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे।

सबसे ज्यादा वे किसान प्रभावित होंगे, जो अपने परिवार का पेट भरने के लिए खेत में उपजाए जाने वाले अन्न पर निर्भर करते हैं और पहले से ही जिनका अस्तित्व संकट में हैं। उनके पास और ज्यादा सूखे या बाढ़, अपने समूह में किसी तरह की बीमारी फैलने या फसल को नई तरह के हानिकारक कीटों द्वारा नष्ट किए जाने जैसी समस्याओं का सामना करने के संसाधन नहीं हैं। तापमान के 4 डिग्री सेल्सियस बढ़ते ही उप–सहारा अफ्रीका के ज्यादातर भाग में फसल उगाने के सीजन में 20 प्रतिशत या उससे ज्यादा कमी आ जाएगी और यह सिर्फ एक औसत भर है। गंभीर सूखे वाले इलाकों में फसल उगाने का सीजन इससे भी कम रह जाएगा।

इस महिला जैसे छोटे किसान जलवायु परिवर्तन से सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे।

इसके परिणामस्वरूप किसानों तथा उनके द्वारा उपजाए और बेचे जाने वाले अन्न पर निर्भर रहने वालों दोनों के लिए अन्न की मात्रा कम हो जाएगी। कुपोषण का शिकार होने वाले बच्चों की संख्या बढ़ जाएगी तथा अमीर और गरीब के बीच पहले से मौजूद असमानता की स्थिति और ज्यादा खराब हो जाएगी।

मिलिंडा:
यह गरीब किसानों की फसल की पैदावार में सुधार लाने के हमारे प्रयासों का अंग था।

ग्लोबल कमीशन ऑन एडेप्टेशन (जिसका मैं सह–अध्यक्ष हूं) ने हाल ही में एक रिपोर्ट जारी की थी, जिसमें ऐसे कदमों की जानकारी दी गई थी, जिन्हें सरकारें आने वाले दशकों में किसानों की सहायता के लिए उठा सकती हैं। मुझे यह भी उम्मीद है कि कृषि क्षेत्र के संबंध में हमारे फाउंडेशन की ओर से किया गया कार्य जलवायु परिवर्तन का सामना करने में किसानों की सहायता करेगा। दशक भर पहले, हमने सूखे–और बाढ़ को सहन कर सकने वाली मक्का और धान जैसी प्रमुख फसलों की किस्मों से जुड़े अनुसंधान में वित्तीय सहायता देनी शुरु की। ये नई किस्में अफ्रीका के कुछ भागों और भारत में किसानों को ज्यादा अन्न उपजाने में पहले से सहायता कर रही हैं और आने वाले वर्षों में जलवायु के अनुकूल फसलों के बेहतर विकल्प और भी स्थानों पर उपलब्ध हो जाएंगे।

लेकिन अगर हम फसलों की पैदावार बढ़ाने में कामयाब हो भी जाएं, तो भी जलवायु परिवर्तन की वास्तविकता अनेक लोगों के लिए उनकी जरूरत का पोषण हासिल करना मुश्किल बना देगी, जिससे उनके बीमारियों के चपेट में आने की आशंका बढ़ जाएगी।

गरीब देशों के लोगों को जलवायु परिवर्तन के मुताबिक ढलने में मदद के लिए सबसे बेहतर काम हम यही कर सकते हैं कि यह सुनिश्चित करें कि वे इतने स्वस्थ हों कि अपना अस्तित्व बचा सकें। हमें कुपोषण का शिकार होने वाले बच्चों की संख्या में कमी लानी होगी और साथ ही स्थितियों को बेहतर बनाना होगा ताकि कुपोषण से ग्रसित लोगों के जीवन की रक्षा हो सके। जिसका आशय यह है कि हमें सुनिश्चित करना होगा कि लोगों की सिर्फ उनकी जरूरत के पोषक तत्वों तक ही नहीं, बल्कि टीकों,दवाइयों और निदान तक पहुंच संभव हो सके।

मिलिंडा:
डब्ल्यूएचओ के प्रमुख जलवायु परिवर्तन को मानव स्वास्थ्य के लिए "एक बहुत बड़ा खतरा" मानते हैं।

गवी और ग्लोबल फंड जैसे संगठन सबसे ज्यादा असुरक्षित स्थानों में स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार लाकर इस संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले हैं। यदि हमें जलवायु से जुड़ी त्रासदी रोकना है, तो जलवायु से संबंधित हस्तक्षेप और समाधान ही काफी नहीं रहेंगे। हमें धरती के बढ़ते तापमान के स्वास्थ्य पर प्रभाव जैसे परोक्ष प्रभावों के बारे में भी विचार करना होगा।

जलवायु परिवर्तन दुनिया के सामने मौजूद अब तक की सबसे कठिन चुनौतियों में से एक है। लेकिन मुझे विश्वास है कि अगर हम उत्सर्जन में कमी लाने के लिए तत्काल कदम उठाएं और बढ़ते तापमान वाली दुनिया के अनुकूल ढलने के तरीके तलाश लें, तो हम जलवायु संबंधी त्रासदी से बच सकते हैं।

जेंडर

मिलिंडा: फाउंडेशन की 20वीं वर्षगांठ होने के अलावा यह साल एक और उपलब्धि के लिए उल्लेखनीय रहेगा, जिसके बारे में मैं हाल ही में काफी सोच रही थी : बीजिंग वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन वूमन की 25वीं वर्षगांठ (अगर यह नाम सुनकर आपको कुछ याद नहीं आ रहा है तो शायद आपको एक कार्यक्रम के बारे में याद होगा, जहां हिलेरी क्लिंटन ने "मानवाधिकार महिलाओं के अधिकार हैं और महिलाओं के अधिकार ही मानवाधिकार हैं" जैसी प्रसिद्ध घोषणा की थी) ।

मुझे याद है कि इस कांफ्रेंस के बारे में पढ़ते हुए मुझे अहसास हुआ था कि विश्व ने घर पर महिलाओं की दावेदारी मजबूत की है मुझे इस बात की पहचान करने में वर्षों लग गए कि मेरे अपने कार्य में महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता कैसे फिट बैठ सकती है।

बिल और मेरे द्वारा फाउंडेशन शुरु किए जाने के बाद, मैंने दुनिया के बेहद गरीब स्थानों की महिलाओं के साथ समय बिताना शुरु किया। उन दौरों के बारे में मैंने अपनी पुस्तक द मोमेंट ऑफ लिफ्ट में बहुत कुछ लिखा है, क्योंकि उन्होंने मेरे लिए सब कुछ बदल कर रख दिया।

मेरी मुलाकात एक ऐसी महिला से हुई, जिसने मुझसे कहा कि मैं उसका नवजात शिशु अपने साथ ले जाऊं, क्योंकि वह इस बात की कल्पना तक नहीं कर सकती कि वह उस शिशु की देखरेख कैसे कर सकेगी। मैंने थाईलैंड की यौनकर्मियों से मुलाकात की, जिन्होंने यह समझने में मेरी मदद की कि अगर मैंने भी वहां जन्म लिया होता, तो मुझे भी अपने परिवार का पेट पालने के लिए कुछ भी करने को मजबूर होना पड़ता। इथियोपिया में मेरी मुलाकात एक सामुदायिक स्वास्थ्य स्वयंसेवी से हुई, जिसने मुझे बताया कि जब वह 10 साल की थी, तो उसने बुरा बर्ताव करने वाले अपने पति के पास लौटने की बजाए पूरी रात एक गढ्डे में सोकर बितायी थी।

इनमें से प्रत्येक महिला लाखों और महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं और यह हकीकत उनकी कहानियों को हमारे लिए और ज्यादा मुश्किल बनाती है कि अगर हमने कोई कदम नहीं उठाया, तो इस तरह की कहानियां दोहरायी जाती रहेंगी। क्योंकि पिछले 25 साल से दुनिया ने एक ही बात सीखी है कि ये समस्याएं अपने आप हल नहीं होंगी।

"आंकड़े स्पष्ट हैं : चाहे आप दुनिया के किसी भी हिस्से में जन्म लें, यदि आपने लड़की के रूप में जन्म लिया है, तो जिंदगी आपके लिए मुश्किल होगी।"

आंकड़े स्पष्ट हैं : चाहे आप दुनिया के किसी भी हिस्से में जन्म लें, यदि आपने लड़की के रूप में जन्म लिया है, तो जिंदगी आपके लिए मुश्किल होगी।

विकासशील देशों में, किशोरावस्था के समय से ही लड़के और लड़कियों के अनुभवों में जबरदस्त अंतर होना शुरु हो जाता है। उप–सहारा अफ्रीका में एक औसत लड़की की पढ़ाई एक औसत लड़के की तुलना में दो साल पहले खत्म हो जाती है। पांच में से एक लड़की की शादी उसके 18वें जन्मदिन से पहले हो जाती है, और वह अपने घर के भीतर ही सत्ता असंतुलन पक्ष की ओर उलझ कर रह जाती है ।

बॉस कौन है? शायद महिला नहीं है

2018 में प्रबंधन से जुड़े पदों पर महिलाओं का प्रतिशत

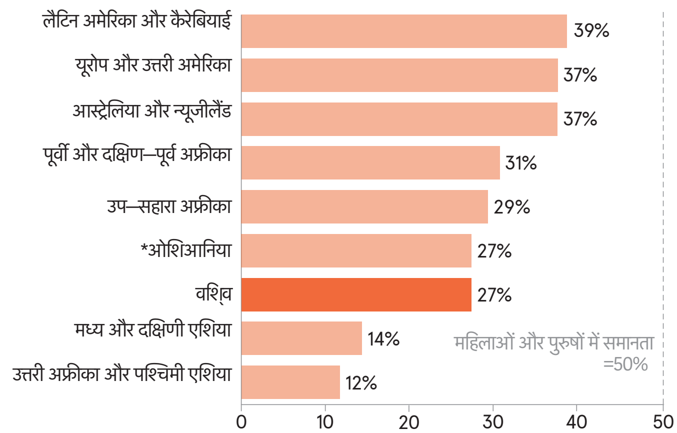

स्रोत : संयुक्त राष्ट्र *ओशिआनिया आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड से अलग है।

दूसरी ओर, उच्च आय वाले देशों में महिलाओं और पुरुषों में असमानता कार्यस्थलों पर ज्यादा मुखर रूप से प्रकट होती है। अमेरिका में कॉलेज और ग्रैजुएट डिग्रियां पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक प्राप्त करती हैं इसके बावजूद वे कुछ खास तरह की नौकरियां और अक्सर कम आकर्षक नौकरियां करती पायी जाती हैं। आधिकारिक पदों पर पुरुषों के आसीन होने की संभावना उनके समान आयु की महिलाओं की तुलना में 70 प्रतिशत अधिक होती है। अश्वेत महिलाओं के मामले में स्थिति और भी खराब है, उन्हें महिला होने के कारण और रंगभेद के कारण हाशिये पर डाल दिया जाता है।

महिलाओं और लड़कियों की प्रगति की रफ्तार इतनी धीमी होने का कारण किसी से छुपा नहीं है। यह इस बात का प्रत्यक्ष परिणाम है कि कार्यकर्ताओं, हिमायत करने वालों और महिला आंदोलनों के साहसी प्रयासों के बावजूद विश्व महिला पुरुषों में समानता को प्राथमिकता मानने से इंकार करता है। वैश्विक नेताओं ने इस चुनौती से निपटने के लिए आवश्यक किसी तरह की राजनीतिक और आर्थिक प्रतिबद्धता व्यक्त नहीं की है।

इस साल के आखिर में जब विश्व बीजिंग कांफ्रेंस की 25वीं वर्षगांठ मनाने के लिए जेनरेशन इक्वेलिटी फोरम में एकजुट होगा, तो मुझे उम्मीद है कि यह महिला–पुरुष समानता के बारे में व्यापक उर्जा सृजित करने और विश्व का ध्यान आकृष्ट करने की दिशा में काफी कुछ करेगा। लेकिन इस बार, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारी उर्जा और ध्यान ठोस कार्रवाई में तब्दील हो।

यदि हमने यह अवसर गंवा दिया, यदि हमने फिर से स्पॉटलाइट का असर कम किया, तो हम इस खतरनाक कथानक में योगदान देंगे कि महिलाओं और पुरुषों के बीच असमानता अनिवार्य है। हमें इस बारे में कोई संशय नहीं रखना चाहिए कि इन समस्याओं का समाधान इसलिए असम्भव दिखाई दे रहा है, क्योंकि हमने कभी उन्हें सुलझाने के लिए आवश्यक प्रयास नहीं किए।

बिल:
पुरुषों को इस बारे में भी बात करने की जरूरत है।

इस बार कुछ अलग करने के लिए, नए समाधानों के लिए हमें साहसी कदम उठाने की जरूरत है जो तीन स्तरों पर एक साथ काम करते हुए असमानता को नष्ट कर देंगे।

पहला स्तर है सरकार, प्रौद्योगिकी, वित्त और स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नेतृत्व की भूमिका निभा रही महिलाओं की फास्ट ट्रैकिंग। जब निर्णय लेने वाले स्थानों में ज्यादा महिलाएं अपना पक्ष रखेंगी, तो ज्यादा से ज्यादा निर्णय हमारे लिए लाभदायक होंगे।

मिलिंडा ने सेन फ्रांसिस्को में लड़कियों के गैरेज का दौरा किया, जहां 9–17 साल की लड़कियां अपने प्रोजेक्ट्स को बनाना और डिजाइन करना सीखती हैं।

लेकिन हम केवल शीर्ष से निचले स्तर तक बदलाव तक ही नहीं रुक सकते या केवल कुछेक क्षेत्रों की महिलाओं पर ही ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते। हमें उन बाधाओं को भी तोड़ना होगा, जिनका सामना समस्त पृष्ठभूमि की महिलाओं को अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में करना पड़ता है। मिसाल के तौर पर, वास्तविकता यह है कि दुनिया भर में कार्यस्थल पर भागीदारी की दृष्टि से महिलाओं और पुरुषों में लगभग 27 प्रतिशत का अंतर है या हमारी अर्थव्यवस्थाएं महिलाओं के अवैतनिक श्रम की बुनियाद पर टिकी हैं या वैश्विक स्तर पर तीन में से एक महिला, महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा की शिकार है, जो धरती पर सबसे आम मानवाधिकार उल्लंघनों में से एक है। इनमें से प्रत्येक बाधा महिलाओं के लिए उनके सपनों को साकार करने या समाज में अपनी प्रतिभा और विचारों को योगदान देने को मुश्किल बनाती है।

अंत में, महिलाओं और पुरुषों में असमानता का मामला क्योंकि समाज के लगभग प्रत्येक पहलु को प्रभावित करता है, इसलिए इस दिशा में उठाया गया कदम भी व्यापक आधार वाला होना चाहिए। हमें इन संवादों की पहले से ही अगुवाई कर रहे आंदोलनकारियों और हिमायत करने वालों को ही नहीं, बल्कि ग्राहकों, हितधारकों, धर्म गुरुओं, मनोरंजन जगत से जुड़े लोगों, पिता और पति जैसे विविध भागीदारों को समाज के मानकों और अपेक्षाओं में बदलाव लाने में भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किए जाने पर विचार विमर्श करने की जरूरत है।

मिलिंडा:
सचमुच, सभी पुरुषों+ लड़कों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे समाज में कौन सी भूमिका निभाते हैं।

मैं स्वीकार करती हूं कि जब मैंने पहली बार महिलाओं और पुरुषों की समानता के बारे में बोलना शुरू किया, मैंने इसे अपने जोखिम पर किया। मैं इस बात से पूरी तरह अवगत थी कि हमारा फाउंडेशन इस मामले से देर से जुड़ रहा है। मैं विशेषज्ञों के समक्ष अपनी बात सफलता से रख पाने को लेकर चिंतित थी और सोच रही थी कि क्या मैं इस कदम के लिए आवाज उठाने के लिए सही व्यक्ति हूं। लेकिन अब मैं जानती हूं कि प्रगति हम सभी के आवाज उठाने पर ही निर्भर करती है।

एक सार्वजनिक पक्ष समर्थक के रूप में मेरी यात्रा की शुरुआत परिवार नियोजन से हुई। विकासशील देशों में 20 लाख से ज्यादा महिलाएं ऐसी हैं, जो गर्भधारण नहीं करना चाहतीं, लेकिन वे आधुनिक गर्भनिरोधकों का इस्तेमाल नहीं कर रही हैं।जब महिलाएं अपनी गर्भावस्था में समय और फासला रखने में समर्थ हो पाती हैं, तो उनके स्कूलों में वक्त बिताने, आमदनी कमाने और अपने प्रत्येक बच्चे को उसके पालन–पोषण के लिए जरूरी देखभाल उपलब्ध कराने की संभावना अधिक होती है।

परिवार नियोजन के लिए हमारी प्रतिबद्धताएं बढ़ाने के अलावा मैंने अपने फाउंडेशन को महिलाओं और पुरुषों में समानता को प्राथमिकता देने वाली रणनीतियां तैयार करने का निर्देश दिया। पिछले कई वर्षों से हमने आंकड़ों की कमियों को दूर करने, पक्ष समर्थन को मजबूती देने और महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में प्रयास किए हैं।

मैं अपने द्वारा स्थापित कम्पनी पिवटल वेंचर्स के माध्यम से अमेरिका में महिलाओं की शक्ति और प्रभाव बढ़ाने के लिए भी कार्य कर रही हूं। पिछले अक्टूबर में, मैंने घोषणा की थी कि पिवटल वेंचर्स अमेरिका में महिला और पुरुष समानता में तेजी लाने के लिए अगले दशक में एक बिलियन डॉलर राशि का निवेश करेगी।मुझे उम्मीद है कि इस निवेश को इन मामलों पर पहले से कार्य कर रहे विशेषज्ञों और पक्ष समर्थकों के प्रति विश्वास मत और अन्य परोपकारियों को अपने, अमेरिका और विश्व भर में दोनों स्थानों पर बड़ा योगदान करने के निमंत्रण के रूप में देखा जाएगा।

बीजिंग कांफ्रेंस की वर्षगांठ समीप है, इसलिए सरकारी वरिष्ठ अधिकारियों, कारोबारियों, परोपकारियों और समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्तियों के लिए अब समय आ चुका है कि वे समान विश्व की हमारी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए ठोस कदम उठाए।

मेरा संदेश स्पष्ट है : समानता के लिए और इंतजार नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष

हमारे विवाह के अवसर पर बिल की मां ने भाषण देते हुए कुछ ऐसा कहा, जिसे हम हमेशा याद रखेंगे : “जो जिंदगी तुम साथ में बिताओगे, वह आखिरकार इस बात का फैसला होगी कि तुमने असाधारण संसाधनों के साथ आने वाले दायित्वों की किस हद तक पहचान की।” पिछले 20 वर्षों से हमने अपने फाउंडेशन के माध्यम से उन दायित्वों को पूरा करने की दिशा में कदम उठाया।

बिल की माता जी ने हमारी शादी के अवसर पर भाषण दिया।

जब हमने इस कार्य शुरुआत की, अपने फाउंडेशन की स्थापना की,उस समय हमें उम्मीद थी कि नवाचार से प्रगति करने की प्रेरणा मिलेगी और साथ ही हम मामलों को सुलझाने के लिए जोखिम उठाकर निभाई जाने वाली अपनी भूमिका को लेकर उत्साहित थे।

20 साल बाद, हम आज भी उतने ही आशान्वित हैं और हम अभी तक जी—जान से कोशिश कर रहे हैं। लेकिन हम यह बखूबी समझते हैं कि नवाचार का समान वितरण ससुनिश्चित करना कितना जरूरी है। यदि नयी प्रगति से कुछ स्थानों पर कुछ लोग लाभांवित हो रहे हैं, तो कुछ अन्य लोग और ज्यादा पिछड़ते भी जा रहे हैं।

परोपकारियों के तौर पर हमारी भूमिका नवाचार में सहायता देने के लिए सिर्फ जोखिम उठाने भर की ही नहीं है, बल्कि इस दिशा में आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए हमारे साझेदारों के साथ मिलकर कार्य करने की भी है। हमारा मानना है कि प्रगति का लाभ प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति को पहुंचना चाहिए।

इसलिए हम बीते दो दशकों से इस कार्य में जुटे हैं और इसीलिए हमें उम्मीद है कि हम आने वाले अनेक दशकों तक इस कार्य को जारी रखेंगे।

Bill & Melinda

समर्पण

हम इस साल का संदेश पत्र उन सभी लोगों को समर्पित कर रहे हैं, जिन्होंने हमारे फाउंडेशन के कार्य को संभव बनाया है।

हम सबसे पहले फाउंडेशन के हमारे सहकर्मियों और पिछले 20 साल में इसके दरवाजों से होकर गुजरे हजारों परिश्रमी लोगों का आभार प्रकट करना चाहते हैं।आप सही मायनों में पक्ष समर्थकों और विशेषज्ञों का एक विश्व स्तरीय समूह है और फाउंडेशन की सफलता दुनिया भर में हमारे साझेदारों के मजबूत संबंध बनाने की आपकी योग्यता की बदौलत है। आप में अनेक लोग हमारे से भी पहले से इस कार्य में जुटे हैं। आप में से अनेक हमारे जाने के बाद भी इस कार्य में जुटे रहेंगे। हम आभारी हैं कि हमें आपसे कुछ सीखने का अवसर मिला।

हम अपने साझेदारों का भी आभार प्रकट करना चाहते हैं: सरकार, संगठनों और व्यक्तियों, जो हमारी प्रगति की राह में जुटे रहे। हमने आपके ज्ञान और विशेषज्ञता से बहुत कुछ सीखा और आप में से अनेक लोगों द्वारा प्रदर्शित साहस से प्रेरणा ग्रहण की, क्योंकि आप अपने देश और समाज के लिए बेहतर भविष्य का निर्माण करने के लिए हमसे कहीं ज्यादा अधिक जोखिम उठाते हैं।

और आखिर में, हम जब इन 20 वर्षों के बारे में चिंतन कर रहे हैं, तो एक शख्स खासतौर ऐसे हैं, जो निरंतर हमें प्रेरित कर रहे हैं और वह हैं बिल गेट्स, सीनियर। आपके बिना हमारा फाउंडेशन वह नहीं होता, जो आज है और हम भी वैसे नहीं होते, जैसे हम हैं। बेसबॉल की उपमा के संदर्भ में कहें, तो आप सही मायनों में अपने आप में ही एक लीग हैं।

बिल के पिता फाउंडेशन के कर्मचारियों के साथ अपना जन्म दिन मना रहे हैं।